بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **01.07.16** बैतुल फ़तूह लंदन।

हम दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला हमें सामर्थ्य प्रदान करे कि जो दिन और जो जुम्अे हमने रमज़ान में व्यतीत किए हैं तथा जो बरकतें हमने रमज़ान में प्राप्त की हैं उन पर क़ायम रहते हुए अपनी सम्पूर्ण प्रतिभाओं तथा क्षमताओं के साथ अगले रमज़ान का स्वागत करें।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित आयतों की तिलावत फ़रमाई-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡٓا اِذَا نُوۡدِىَ لِلصَّلٰوةِ مِنۡ يَّوۡمِ الۡجُمُعَةِ فَاسۡعَوۡا اِلٰى ذِكۡرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الۡبَيۡعَ ؕ ذٰلِكُمۡ خَيۡرٌ لَّكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ۝۹

فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانۡتَشِرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ وَابۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِ اللّٰهِ وَاذۡكُرُوا اللّٰهَ كَثِيۡرًا لَّعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُوۡنَ ۝۱۰

وَاِذَا رَاَوۡا تِجَارَةً اَوۡ لَهۡوَ ِۨ انۡفَضُّوۡۤا اِلَيۡهَا وَتَرَكُوۡكَ قَآئِمًا ؕ قُلۡ مَا عِنۡدَ اللّٰهِ خَيۡرٌ مِّنَ اللَّهۡوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ؕ وَاللّٰهُ خَيۡرُ الرّٰزِقِيۡنَ

अल्लाह तआला ने रमज़ान के रोज़ों की अनिवार्यता का जब आदेश दिया तो साथ ही यह भी फ़रमाया कि اَيَّامًا مَّعۡدُوۡدٰتٍ गिनती के कुछ दिन हैं। जब रमज़ान शुरु हुआ तो हममें से बहुत से सोचते होंगे कि गर्मियों के लम्बे दिन हैं और उनमें ये तीस रोज़े पता नहीं किस प्रकार पूरे होंगे, बड़ी कठिनाई होगी। परन्तु जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि गिनती के कुछ दिन हैं, ये दिन भी व्यतीत हो गए। फ़रमाया कि आज रमज़ान का अन्तिम जुम्अः है शेष पाँच अथवा कुछ क्षेत्रों में सम्भवतः चार रोज़े रह गए होंगे। इन चार पाँच दिनों में भी हममें से प्रत्येक को प्रयास करना चाहिए कि यदि कोई कमियाँ रमज़ान में पूर्णतः लाभान्वित होने में रह गई हों तो उन्हें हम इन दिनों में दूर करने का प्रयत्न करें। अल्लाह तआला से दुआ करें कि अल्लाह तआला हमारे पापों को छिपाए, हम पर रहम फ़रमाए तथा हमें रमज़ान की बरकतों से वंचित न रक्खे। आज, जैसा कि मैंने कहा कि रमज़ान का अन्तिम जुम्अः है जिसे साधारणतः जुम्अःतुल विदा कहते हैं। सामान्य मुसलामनों में तो इस जुम्अः को रमज़ान का अन्तिम जुम्अः समझते हुए तथा यह धारणा रखते हुए कि इस जुम्अः में समस्त दुआएँ क़बूल हो जाती हैं तथा इस जुम्अः को अदा करने से पूरे साल की छूटी हुई नमाज़ें तथा जुम्ओं और हर प्रकार की इबादतों की अदायगी का हक़ भी अदा हो जाता है, जो इसमें शामिल हो जाए, परन्तु एक वास्तविक मोमिन की ऐसी धारणा नहीं। यह एक बड़ी ग़लत धारणा है, एक अहमदी और वास्तविक मोमिन के विचार में तो ऐसी बातें और ऐसी धारणाएँ दीन के साथ उपहास करने वाली चीज़े हैं। एक बार एक मज्लिस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सवाल हुआ कि मुसलमानों में यह प्रथा है कि जुम्अःतुल विदा के दिन लोग चार रक्अतें नमाज़ पढ़ते हैं तथा उसका नाम क़ज़ा-ए-उमरी (पूरी आयु में छूटी हुई नमाज़ों की पूर्ति करने वाली नमाज़) रखते हैं और उद्देश्य यह होता है कि पिछली नमाज़ें जो अदा नहीं कीं, उनकी पूर्ति हो जाए। इसका कोई प्रमाण है या नहीं, इसकी क्या वास्तविकता है? क्या जायज़ है?

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि एक व्यर्थ कार्य है। आपने फ़रमाया कि जो व्यक्ति जान बूझकर पूरे वर्ष इस लिए नमाज़ें छोड़ता है कि क़ज़ा-ए-उमरी वाले दिन अदा कर लूँगा, तो वह पापी है और जो व्यक्ति लज्जित होकर क्षमा याचना करता है और इस नीयत से पढ़ता है कि भविष्य में कभी नमाज़ न छोड़ूँगा तो उसके लिए कोई बुराई नहीं। फ़रमाया कि हम तो इस विषय में हज़रत अली का ही जवाब देते हैं। हज़रत अली रज़ीअल्लाहु अन्हु के उत्तर की घटना इस प्रकार है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बयान फ़रमाई है कि एक बार एक व्यक्ति अनुचित समय पर नमाज़ पढ़ रहा था, नमाज़ का समय नहीं था, नमाज़ पढ़ रहा था। किसी व्यक्ति ने हज़रत अली रज़ीअल्लाहु अन्हु को कहा कि आप वर्तमान ख़लीफ़ः हैं उसे मना क्यूँ नहीं करते कि ग़लत समय पर नमाज़ पढ़ रहा है। उन्होंने फ़रमाया- मैं डरता हूँ कि कहीं इस आयत के नीचे आकर दोषी न बन जाऊँ कि ارءیت الذی ینھی عبدا اذا صلی अर्थात क्या तू ने ध्यान दिया उस पर जो रोकता है एक बन्दे को, जब वह नमाज़ पढ़ता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस संदर्भ के बाद फ़रमाते हैं कि यदि ग्लानि के रूप में प्रायश्चित करता है तो पढ़ने दो क्यूँ मना करते हो, आख़िर दुआ ही करता है, हाँ उसमें साहस हीनता है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट रूप से फ़रमा दिया कि यह साहस की कमी है और यदि नीयत कज़ा-ए-उमरी की है तथा उस सुधार की नहीं है। यदि तो इस नीयत से पढ़ी कि आज मैं चार रक्अतें पढ़ रहा हूँ तथा आज के बाद मेरी तौबा, मैं भविष्य में यथावत् नमाज़ें पढ़ता रहूँगा तो फिर तो ठीक है। यदि सुधार की नीयत नहीं है तो फिर ऐसा व्यक्ति गुनहगार है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- मोमिन तो अल्लाह तआला की बताई हुई नेकियों को जारी रखता है। वह तो अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी की भावनाओं से परिपूर्ण होता है। वह तो रमज़ान में से गुज़रता है तो अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए। जब वह अल्लाह तआला के आदेशानुसार चलते हुए रमज़ान को विदा करता है तो बड़े भारी मन के साथ कि अब हम रमज़ान से विदा तो हो रहे हैं परन्तु इन दिनों की याद सदैव दिलों में ताज़ा रक्खेंगे। रमज़ान में जो प्यारी प्यारी और नेक बातें सीखी हैं उनकी जुगाली करते रहेंगे। रमज़ान में जो इबादतों की ओर ध्यानाकर्षित हुआ है उसे सदैव जीवित रक्खेंगे और हमारे क़दम तेरी निकटता को प्राप्त करने के लिए कभी नहीं रुकेंगे। हमने तो तेरे प्यार के अद्भुत दृश्य देखे। जब हम तेरे पास जाने का प्रयास करते हैं तो तू अपने वादे के अनुसार दौड़कर हमारे पास आता है। अतः ये कैसे हो सकता है कि हम अपने सांसारिक रिश्तों की यादों को तो ताज़ा रक्खें और जो सबसे अधिक प्यार करने वाला है उसकी याद को भुला दें तथा उसके उपकारों को भुला दें। अल्लाह तआला के तो उपकार करने के ढंग भी निराले हैं। हर सातवें दिन जुम्अः रखकर उन्हीं बरकतों को लेने वाला हमें बना दिया जो जुम्अः के दिन मिलनी थीं या मिलती हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जुम्अः के दिन एक ऐसी घड़ी आती है कि एक मुसलमान खड़ा नमाज़ पढ़ रहा हो तो जो दुआ मांगे क़बूल हो जाती है परन्तु यह घड़ी अत्यधिक लघु है। अतः आज के बाद हम अल्लाह तआला की इन निकट की घड़ियों से जुदा नहीं हो रहे बल्कि यह समय हमें सात दिन बाद दोबारा मिलने वाला है। यदि कोई इन नेकियों और इन घड़ियों को विदा कर रहा है तो वह मोमिन नहीं है। फ़रमाया- आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें अल्लाह तआला से जल्दी जल्दी मिलने और उसकी प्रसन्नता प्राप्ति का मार्ग समझाते हुए बताया कि पाँच नमाज़ें और जुम्अः अगले जुम्अः तक तथा

रमज़ान से अगले रमज़ान तक, इनके बीच होने वाले पापों का प्रायश्चित कर देता है परन्तु शर्त यह है कि इंसान बड़े बड़े गुनाहों से बचता रहे।

ये आयतें जो मैंने तिलावत की हैं इनमें भी अल्लाह तआला ने जुम्अः के महत्त्व के बारे में बताया है। विशेष रूप से जुम्अः में शामिल होने की ओर ध्यान दिलाया गया है। जुम्अः की अज़ान सुनो तो अपने सब काम और कारोबार बन्द करो और जुम्अः के लिए आओ और ख़ुत्बः जुम्अः भी नमाज़ ही का अंश है। इस लिए सुस्ती न दिखाओ कि नमाज़ शरु होने तक पहुंच जाएँगे और नमाज़ में शामिल हो जाएँगे बल्कि ख़ुत्बः के लिए पहुंचने का प्रयास करना चाहिए। इस ज़माने में अल्लाह तआला ने हमें यहाँ, इसके बीच यह भी वर्णन कर दूँ, बड़ा विशेष वर्णन है कि एम टी ए की सुविधा हमें उपलब्ध कराई हुई है। योरुप में तथा अफ़्रीक़ा के कुछ देशों में तो जुम्अः का समय भी एक ही है। इस लिए एक ही समय जब है तो फिर ख़लीफ-ए-वक़्त का ख़ुत्बः सुनना चाहिए। जहाँ समय का अन्तर है वहाँ भी अहमदियों को सुनना चाहिए। यदि लाईव नहीं तो रिकार्डिंग सुन लें और इस प्रकार इस ख़ुत्बः के पूरे उद्धरण लेकर ख़ुत्बः देने वालों अथवा जहाँ मुबल्लिग़, मुरब्बी ख़ुत्बे देते हैं उनको अपनी जमाअतों में उस दिन या उसी दिन अथवा अगले दिन या अगले दिन नहीं तो अगले सप्ताह यह ख़ुत्बः सुनाना चाहिए। यह एक बड़ा माध्यम है जमाअत में एकता पैदा करने का बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने को जो जुम्अः के साथ विशेष सम्बंध है अल्लाह तआला ने इस अविष्कार के द्वारा ख़लीफ़-ए-वक़्त के ख़ुत्बः को भी उसका एक अंश बना दिया है। फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम्हारे व्यापार, दुनया के कारोबार तथा खेल कूद तुम्हें जुम्अः पढ़ने से रोकने वाले न हों। विशेष रूप से इस ज़माने में व्यापार, अंतर्राष्ट्रीय स्तर के होने के कारण तुम्हें अधिक व्यस्त रखते हैं। इसी प्रकार तुम्हारे खेल कूद हैं तथा सांसारिक धन्धे हैं जो अंतर्राष्ट्रीय होने के कारण समय सीमा का ध्यान नहीं रखते। उनमें तुमने या एक मोमिन ने यथासम्भव जुम्अः के महत्त्व का ध्यान रखना है क्यूँकि एक मोमिन की सर्वाधिक प्राथमिकता अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करना है और यही एक मोमिन की प्राथमिकता होनी चाहिए।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा तो आपकी पवित्र शक्ति के कारण पूर्ण रूप से पवित्र हो चुके थे तथा उनको अल्लाह तआला की प्रसन्नता सर्वप्रिय थी इस लिए उनके विषय में तो सोचा भी नहीं जा सकता कि वे व्यापारों और खेल कूद के कारण जुम्अः छोड़ते होंगे। निःसन्देह यह हमारे ही युग का चित्रण है, मसीह मौऊद के ज़माने का ही चित्रण है जब दीन की प्राथमिकता पीछे चली जाएगी तथा दुनया की प्राथमिकताएँ सामने आ जाएँगी। चौबीस घन्टे ही व्यापार और खेल कूद में लिप्त होंगे, दुनया की दूरियाँ कम हो जाएँगी। मीडिया के द्वारा घर बैठे ही विश्व की, अनेक स्थानों की जो व्यर्थ और निरर्थक बातें हैं हर समय घर बैठे मिल रही होंगी। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐसे समय में यदि तुम अपनी प्राथमिकताएँ व्यवस्थित रक्खोगे तो याद रक्खो कि अल्लाह तआला की कृपाओं को प्राप्त करने वाले बनोगे। एक अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जुम्अः की नमाज़ के लिए आया करो तथा इमाम के निकट होकर बैठा करो और एक व्यक्ति जुम्अः में पीछे रहते रहते जन्नत से पीछे रह जाता है, जबकि वह जन्नतियों में से होता है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जुम्अः के महत्त्व के विषय में बताया तथा इसी महत्ता के कारण आपने अपने ज़माने में 1895-96 ई. में सरकार से एक मांग करनी चाही कि हिन्दुस्तान में जुम्अः अदा करने के लिए दो घन्टे की छुट्टी हुआ करे

सरकारी दफ़तरों में, और मुसलमानों के हस्ताक्षर लेने आरम्भ कर दिए परन्तु उस समय मौलवी मुहम्मद हुसैन साहब ने एक विज्ञापन दिया कि यह कार्य तो अच्छा है परन्तु मिर्ज़ा साहब के हाथों यह काम नहीं होना चाहिए हम स्वयं इस कार्य को सम्पन्न करेंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हमारी तो कोई ख्याति प्राप्त करने की इच्छा नहीं है, आप स्वयं कर लें। और आपने कार्य-वाही बन्द कर दी फिर। परन्तु फिर वह काम आगे नहीं चला परन्तु इस प्रकार एक अवसर पर वायसराए हिन्द लॉर्ड कर्ज़न को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक ज्ञापन भेजा जिसमें उनके गुणों पर चर्चा करके तथा मुसलमानों के अधिकारों को अदा करने पर आभार जताकर आपने इस ज्ञापन में लिक्खा कि एक अभिलाषा उनकी, अर्थात मुसलमानों की अभी शेष है और वे आशा करते हैं कि जिन हाथों से ये मुरादें पूरी हुई हैं अर्थात मस्जिदें मिली हैं, वह अभिलाषा इन्हीं हाथों से पूरी होगी और वह अभिलाषा यह है कि जुम्अः का दिन इस्लाम का एक महान त्योहार है और क़ुरआन शरीफ़ ने इस दिन को विशेषतः छुट्टी का दिन घोषित किया है। इस देश में तीन क़ौमें हैं, हिन्दु ईसाई और मुसलमान। हिन्दुओं और ईसाईयों को उनकी धार्मिक प्रथाओं को पूरा करने का दिन सरकार ने दिया हुआ है जैसे कि रविवार, जिसमें वे अपनी धार्मिक क्रियाएँ पूरी करते हैं जिसकी छुट्टी साधारणतः होती है। परन्तु यह तीसरा सम्प्रदाय मुसलमान अपने त्योहार के दिन से अर्थात जुम्अः से वंचित हैं। फिर आपने आगे चलकर फ़रमाया कि इन उपकारों की सूचि में जो इस सरकार ने मुसलमानों पर किए हैं यदि यह उपकार भी किया गया कि सामान्यतः जुम्अः की छुट्टी दी जाए तो यह ऐसा एहसान होगा जो सोने के पानी से लिखने योग्य होगा।

आज मुसलमान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर अथवा तथाकथित आलिम जो हैं, आरोप लगाते हैं कि अंग्रज़ों का लगाया हुआ पौधा है परन्तु अंग्रेज़ सरकार को मुसलमानों के धार्मिक अधिकार की ओर ध्यान दिलाया तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने, किसी अन्य मुसलमान लीडर को यह साहस न हुआ और यह आप का ही काम था। क्यूँकि वह ज़माना जिसमें इस्लाम की महत्ता दुनया पर स्पष्ट करना तथा उसकी शिक्षानुसार कर्म कराना था, यह आपके द्वारा ही होना था, यह आपके ज़िम्मे काम था। अतः हम जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने का दावा करने वाले हैं हमारी प्रत्येक क्थनी और करनी के द्वारा इस्लाम की शिक्षा का यथार्थ प्रकट होना चाहिए। अतः हमें यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि यह रमज़ान जिन बरकतों को लेकर आया था और बरकतें छोड़कर जा रहा है, उसे हमने अपने जीवन का अंश बनाना है, इन्शाअल्लाह। हमने इस्लाम का कार्यशील चित्र केवल एक महीने के लिए नहीं बनना है बल्कि सदैव ज़माने के इमाम से किए हुए वादे को पूरा करना है।

अतः आज हम सब यह प्रतिज्ञा करें कि हम अपनी बैअत के एहद को पूरा करने वाले बनेंगे तथा अल्लाह तआला और उसके बन्दों के हक़ उसी प्रकार अदा करने का प्रयास करेंगे जैसा कि एक मोमिन से आशा की जाती है और जिस प्रकार अल्लाह तआला ने आदेशित किया है तथा जिसकी अभिव्यक्ति हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने की है। रमज़ान की बरकतों को हम सदैव अपने जीवन का अंश बनाएँगे, इन्शाअल्लाह। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन